

1971

war

चरण 2

भारत का हस्तक्षेप और युद्ध की शुरुआत (दिसंबर 1971)

1971 के युद्ध का दूसरा चरण भारत के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ था। यह वह समय था जब भारत ने पाकिस्तान के अत्याचारों और मानवीय संकट का सीधा मुकाबला करने का फैसला किया। युद्ध की शुरुआत पाकिस्तान ने की, लेकिन भारत की प्रतिक्रिया पहले से ही सोची-समझी और रणनीतिक थी।

मुक्ति वाहिनी का गठन और भारत की गुप्त सहायता

जैसा कि पहले चरण में बताया गया है, मार्च 1971 में पाकिस्तानी सेना द्वारा 'ऑपरेशन सर्चलाइट' के क्रूर अभियान के बाद, पूर्वी पाकिस्तान के लोगों ने अपने दम पर प्रतिरोध करना शुरू कर दिया। उन्होंने छोटे-छोटे समूहों में संगठित होकर एक छापामार सेना बनाई, जिसे 'मुक्ति वाहिनी' कहा गया। इस वाहिनी में पूर्वी बंगाल रेजिमेंट, ईस्ट पाकिस्तान राइफल्स के बागी सैनिक और आम नागरिक शामिल थे, जो अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए कुछ भी करने को तैयार थे।

भारत ने महसूस किया कि मुक्ति वाहिनी को सहायता देना न केवल मानवीय है बल्कि यह भारत के अपने राष्ट्रीय हितों के लिए भी आवश्यक है। भारत पर

1 करोड़ शरणार्थियों का भारी बोझ था, और इस संकट का एकमात्र स्थायी समाधान पूर्वी पाकिस्तान की स्वतंत्रता ही थी। भारत ने सीधे तौर पर युद्ध में उतरने के बजाय, पर्दे के पीछे से मुक्ति वाहिनी का समर्थन करने का फैसला किया।

* **प्रशिक्षण और हथियार:** भारतीय सेना ने अपनी सीमा के भीतर गुप्त रूप से मुक्ति वाहिनी के लिए प्रशिक्षण शिविर स्थापित किए। इन शिविरों में हजारों बंगाली युवाओं को छापामार युद्ध, हथियार चलाने और सैन्य रणनीति का प्रशिक्षण दिया गया। उन्हें छोटे हथियार, गोला-बारूद और संचार उपकरण भी मुहैया कराए गए।

* **इंटेलिजेंस और सूचना:** भारत की खुफिया एजेंसियां, विशेषकर रिसर्च एंड एनालिसिस विंग (RAW), मुक्ति वाहिनी को पाकिस्तानी सेना की गतिविधियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी देती रहीं। इस जानकारी का उपयोग करके मुक्ति वाहिनी ने पाकिस्तानी सेना के ठिकानों, आपूर्ति लाइनों और संचार केंद्रों पर सफल हमले किए।

* **मनोबल बढ़ाना:** भारत ने ऑल इंडिया रेडियो के माध्यम से बंगाली में प्रसारण शुरू किया, जिसका उद्देश्य पूर्वी पाकिस्तान के लोगों और मुक्ति वाहिनी के लड़ाकों का मनोबल बढ़ाना था। यह एक मनोवैज्ञानिक युद्ध का हिस्सा था, जिसने पाकिस्तानी सेना के हौसले को कमजोर किया।

मुक्ति वाहिनी की छापामार कार्रवाइयां इतनी सफल रहीं कि पाकिस्तानी सेना को पूर्वी पाकिस्तान के ग्रामीण इलाकों पर नियंत्रण बनाए रखना मुश्किल हो गया।

अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति और भारत की तैयारी

इंदिरा गांधी जानती थीं कि भारत के सीधे हस्तक्षेप से अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की प्रतिक्रिया भड़क सकती है। संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन दोनों ही पाकिस्तान के सहयोगी थे और वे भारत के किसी भी कदम का विरोध कर सकते थे। इसलिए, इंदिरा गांधी ने राजनयिक और सैन्य दोनों स्तरों पर सावधानीपूर्वक तैयारी की।

* **राजनयिक दौरें:** इंदिरा गांधी ने दुनिया के प्रमुख देशों का दौरा किया और उन्हें पूर्वी पाकिस्तान में चल रहे नरसंहार और शरणार्थी संकट की गंभीरता से अवगत कराया। हालांकि, अमेरिका ने इसे पाकिस्तान का "आंतरिक मामला" बताकर टाल दिया।

* **सोवियत संघ के साथ संधि:** अमेरिका की उदासीनता को देखते हुए, भारत ने अगस्त 1971 में सोवियत संघ के साथ "शांति, मैत्री और सहयोग की संधि" पर हस्ताक्षर किए। यह संधि एक महत्वपूर्ण कदम था, जिसने भारत को अमेरिकी और चीनी हस्तक्षेप के खिलाफ एक मजबूत समर्थन प्रणाली प्रदान की।

पाकिस्तान का हमला: 'ऑपरेशन चंगेज खान' (3 दिसंबर 1971)

पाकिस्तान के सैन्य शासक, जनरल याहया खान, को यह विश्वास था कि भारत एक-साथ दो मोर्चों पर युद्ध नहीं लड़ पाएगा। उन्होंने सोचा कि अगर वे भारत के पश्चिमी हिस्से पर अचानक हमला करते हैं, तो भारत का ध्यान पूर्वी

मोर्चे से हट जाएगा और वे पूर्वी पाकिस्तान में अपनी स्थिति मजबूत कर लेंगे।

3 दिसंबर 1971 की शाम 5:40 बजे, पाकिस्तानी वायु सेना ने बिना किसी पूर्व चेतावनी के भारत के पश्चिमी हिस्से में 11 भारतीय हवाई अड्डों पर एक साथ हमला कर दिया। इस हमले को 'ऑपरेशन चंगेज खान' नाम दिया गया था। जिन हवाई अड्डों पर हमला किया गया, उनमें अमृतसर, पठानकोट, श्रीनगर, अवंतीपुर, जोधपुर, और आगरा जैसे महत्वपूर्ण हवाई अड्डे शामिल थे।

यह हमला पर्ल हार्बर पर हुए हमले की तरह था, जिसका उद्देश्य भारत को अचंभित करना और उसकी वायु शक्ति को नष्ट करना था। हालांकि, भारत ने पहले से ही इसकी आशंका जताई थी और अपने विमानों को सुरक्षित स्थानों पर छिपा दिया था। पाकिस्तानी वायु सेना के हमले से भारत को ज्यादा नुकसान नहीं हुआ, बल्कि इसने भारत को युद्ध में पूरी तरह से उतरने का मौका दे दिया।

भारत की जवाबी कार्रवाई और युद्ध की घोषणा

पाकिस्तान के हमले के तुरंत बाद, भारत ने त्वरित और निर्णायक कार्रवाई की।

* **युद्ध की घोषणा:** 3 दिसंबर की आधी रात को, प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने रेडियो पर राष्ट्र को संबोधित किया और घोषणा की कि पाकिस्तान ने भारत के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया है। उन्होंने कहा, "आज से हमारे देश की धरती

युद्ध के मैदान में बदल गई है।" इस घोषणा के साथ ही भारत ने आधिकारिक तौर पर युद्ध में प्रवेश किया।



* **समन्वित हमला**: भारतीय सशस्त्र बलों ने पूरी तैयारी के साथ पाकिस्तान पर एक समन्वित हमला शुरू कर दिया। सेना, नौसेना और वायु सेना ने मिलकर पूर्वी और पश्चिमी दोनों मोर्चों पर एक साथ जवाबी हमला किया।

* **पूर्वी मोर्चे पर**: भारतीय सेना ने तीन तरफ से पूर्वी पाकिस्तान में प्रवेश किया।

* पश्चिमी मोर्चे पर: भारतीय वायु सेना ने पाकिस्तान के हवाई अड्डों पर जोरदार जवाबी हमला किया।

* नौसेना का मोर्चा: भारतीय नौसेना ने कराची बंदरगाह की ओर बढ़ना शुरू किया।

इस तरह, पाकिस्तानी हमले ने भारत को युद्ध में पूरी तरह से उतरने का बहाना दे दिया, जबकि भारत इसके लिए पहले से ही तैयार था। इस हमले ने युद्ध की दिशा तय कर दी और अगले 13 दिनों में पाकिस्तान को एक ऐतिहासिक हार का सामना करना पड़ा।